परिणाम : एक दृष्टि में

2.1 उद्यमों की संख्या तथा कार्यरत व्यक्ति

2.1.1 उद्यम

आर्थिक गणना–05 के ऑकड़ों पर दृष्टिपात करने पर स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है कि चतुर्थ आर्थिक गणना–98 के सापेक्ष कुल उद्यमों में 42.2 प्रतिशत की वृद्धि हुई । इसी प्रकार कृषीय उद्यमों व अकृषीय उद्यमों में क्रमशः 108.9 तथा 39.1 प्रतिशत वृद्धि परिलक्षित हुई । ग्रामीण उद्यमों में जहॉ 62.1 प्रतिशत वृद्धि परिलक्षित हुई वहीं नगरीय उद्यमों में यह वृद्धि 23.7 प्रतिशत रही । स्वकार्य उद्यमों में 32.5 प्रतिशत और संस्थानों में 72.7 प्रतिशत की वृद्धि निम्नांकित तालिका से परिलक्षित होती है :–

उद्यमों का प्रकार	उद्यमों की संख्या (लाख में)/प्रतिशत		प्रतिशत वृद्धि (1998–2005)
	1998	2005	
कृषीय	1.23(4.3)	2.57(6.4)	108.9
अकृषीय	27.05(95.6)	37.64(93.6)	39.1
ग्रामीण	13.60(48.1)	22.05(54.8)	62.1
नगरीय	14.68(51.9)	18.16(45.2)	23.7
स्वकार्य	21.47(75.9)	28.45(70.8)	32.5
संस्थान	6.81(24.1)	11.76(29.2)	72.7
कुल	28.28(100.0)	40.21(100.0)	42.2

(तालिका–एस–1)

2.1.2 कार्यरत व्यक्ति

प्रदेश के कुल 40.21 लाख उद्यमों में कुल 81.45 लाख व्यक्ति कार्यरत पाये गये जो वर्ष 1998 की तुलना में 17.6 प्रतिशत अधिक थे । भाड़े के कर्मकरों की संख्या में 8.1 प्रतिशत की वृद्धि दृष्टिगोचर हुई । तुलनात्मक स्थिति निम्नलिखित तालिका से परिलक्षित होती है:–

उद्यमों का प्रकार	कार्यरत व्यक्तियों की संख्या (लाख में)/प्रतिशत		प्रतिशत वृद्धि (1998–2005)
	1998	2005	
कृषीय	2.15(3.1)	5.21(6.4)	142.3
अकृषीय	67.13(96.9)	76.24(93.6)	13.6
ग्रामीण	29.87(43.1)	40.82(50.1)	36.7
नगरीय	39.41(56.9)	40.63(49.9)	3.1
स्वकार्य	31.49(45.5)	37.93(46.6)	20.4
संस्थानों में कुल	37.79(54.5)	43.52(53.4)	15.2
भाड़े पर	31.12(44.9)	33.64(41.3)	8.1
प्रति उद्यम कुल	2.45 व्यक्ति	2.03 व्यक्ति	–
प्रति संस्थान भाड़े पर	4.62 व्यक्ति	2.86 व्यक्ति	–
कुल	69.28(100.0)	81.45(100.0)	17.6

(तालिका–एस–2)

2.1.3 ग्रामीण एवं नगरीय उद्यमों का क्षेत्रवार वितरण

2.1.3.1 उपर्युक्त प्रस्तर 2.1.1 के अनुसार ग्रामीण क्षेत्र के कुल उद्यमों की संख्या में 62.1 प्रतिशत की वृद्धि हुई जबकि ग्रामीण क्षेत्र में ही कृषीय उद्यमों की संख्या में 118.9 प्रतिशत तथा अकृषीय उद्यमों की संख्या में 57.3 प्रतिशत की वृद्धि पायी गयी । इसके अतिरिक्त स्वकार्य उद्यमों तथा संस्थानों में क्रमशः 51.1 प्रतिशत तथा 115.9 प्रतिशत की वृद्धि हुई ।

2.1.3.2 नगरीय क्षेत्र के कुल उद्यमों में 23.7 प्रतिशत की वृद्धि हुई । अकृषीय उद्यमों में जहॉ 23.4 प्रतिशत की वृद्धि दृष्टिगोचर हुई वहीं कृषीय उद्यमों में यह वृद्धि 52.9 प्रतिशत थी । स्वकार्य उद्यमों तथा संस्थानों की संख्या में क्रमशः 11.9 तथा 50.3 प्रतिशत की वृद्धि पायी गयी । तुलनात्मक विवरण निम्न तालिका में प्रदर्शित है :–

उद्यमों का प्रकार	ग्रामीण			नगरीय		
	उद्यमों की संख्या (लाख में) / प्रतिशत		प्रतिशत वृद्धि (1998–2005)	उद्यमों की संख्या (लाख में) / प्रतिशत		प्रतिशत वृद्धि (1998–2005)
	1998	2005		1998	2005	
कृषीय	1.06(7.79)	2.32(10.52)	118.9	0.17(1.16)	0.26(1.4)	52.9
अकृषीय	12.54(92.21)	19.73(89.48)	57.3	14.51(98.84)	17.90(98.6)	23.4
स्वकार्य	11.28(82.94)	17.04(77.28)	51.1	10.19(69.41)	11.40(62.8)	11.9
संस्थान	2.32(17.06)	5.01(22.72)	115.9	4.49(30.59)	6.75(37.2)	50.3
समस्त	13.60(100.0)	22.05(100.0)	62.1	14.68(100.0)	18.16(100.0)	23.7

(तालिका–एस–1)

2.1.4 ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रवार कार्यरत व्यक्ति

ग्रामीण क्षेत्र के कुल उद्यमों में रोजगार पाने वाले कर्मकरों की संख्या में 36.7 प्रतिशत की वृद्धि पायी गयी जबकि भाड़े पर कार्यरत कर्मकरों की संख्या में यह वृद्धि 19.1 प्रतिशत दिखायी पड़ी ।

नगरीय क्षेत्र में स्थित कुल उद्यमों में कार्यरत व्यक्तियों की संख्या में 0.8 प्रतिशत का ह्रास दृष्टिगोचर हुआ जबकि भाड़े पर कार्यरत कर्मकरों की संख्या में 1.4 प्रतिशत की वृद्धि हुयी । कृषीय उद्यमों में कार्यरत कर्मकरों की संख्या में जहॉ 32.5 प्रतिशत की वृद्धि दिखी वहीं अकृषीय उद्यमों में कार्यरत कर्मकरों की संख्या में 1.0 प्रतिशत का ह्रास भी परिलक्षित हुआ । तुलनात्मक विवरण निम्न तालिका में प्रदर्शित हैः–

कर्मकरों का वर्गीकरण	ग्रामीण			न्गरीय		
	व्यक्तियों की संख्या (लाख में) / प्रतिशत		प्रतिशत वृद्धि (1998–2005)	व्यक्तियों की संख्या (लाख में) / प्रतिशत		प्रतिशत वृद्धि (1998–2005)
	1998	2005		1998	2005	
भाड़े पर	11.70(39.17)	13.94(34.15)	19.1	19.43(47.46)	19.70(48.49)	1.4
कृषीय	1.75(5.86)	4.68(11.46)	167.4	0.40(0.98)	0.53(1.30)	32.5
अकृषीय	28.13(94.17)	36.14(88.53)	28.5	40.52(98.97)	40.10(98.70)	(–)1.0
समस्त	29.87(100.0)	40.82(100.0)	36.7	40.94(100.0)	40.63(100.0)	(–)0.8

(तालिका–एस–1)

2.2 प्रमुख कार्यकलाप वर्गानुसार अकृषीय उद्यमों का वितरण

2.2.1 कुल अकृषीय उद्यम

प्रदेश के कुल अकृषीय उद्यमों में केवल फुटकर व्यापार, लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें, विनिर्माण, जलपान गृह तथा होटल एवं यातायात एवं भण्डारण ही ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें कुल उद्यमों के 91.3 प्रतिशत उद्यम केन्द्रित हैं। वर्ष 1998–2005 की अवधि में फुटकर व्यापार में 63.2 प्रतिशत की वृद्धि, जबकि यातायात एवं भण्डारण में 4.8 प्रतिशत की कमी परिलक्षित हुई । तुलनात्मक स्थिति निम्न तालिका में प्रदर्शित हैः–

प्रमुख कार्यकलाप वर्ग	उद्यमों की संख्या(लाख में)		प्रतिशत	स्थान	प्रतिशत वृद्धि (1998–2005)
	1998	2005			
फुटकर व्यापार	12.50	20.40	54.2	1	63.2
विनिर्माण	5.84	8.19	21.7	2	40.2
लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें	5.89	3.85	10.2	3	(–)34.6'

यातायात एवं भण्डारण	0.63	0.60	1.6	4	(–)4.8
जलपान गृह तथा होटल	0.89	1.31	3.5	5	47.2
अन्य (शेष सभी)	1.30	3.28	8.7	–	152.3
समस्त	27.05	37.63	100	–	39.1

(तालिका–एस–1)

2.2.2 स्वकार्य उद्यम

कुल स्वकार्य उद्यमों के 86.9 प्रतिशत उद्यम फुटकर व्यापार, विनिर्माण, लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें के अन्तर्गत आते हैं । वर्ष 1998–2005 की अवधि में फुटकर व्यापार में 48.3 एवं विनिर्माण में 29.0 प्रतिशत की वृद्धि हुई । विस्तृत सूचना निम्नांकित तालिका में दी गयी है :–

प्रमुख कार्यकलाप वर्ग	उद्यमों की संख्या(लाख में)		प्रतिशत	स्थान	प्रतिशत वृद्धि (1998–2005)
	1998	2005			
फुटकर व्यापार	10.57	15.68	59.7	1	48.3
विनिर्माण तथा मरम्मत सेवाएं	4.10	5.29	20.1	2	29.0
लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें	3.70	1.84	7.1	3	(–)50.2′
अन्य (शेष सभी)	2.00	3.45	13.1	–	72.5
समस्त	20.37	26.26	100.0	–	28.9

(तालिका–एस–1)

′ तुलनीय नहीं है ।

2.2.3 संस्थान

कुल अकृषीय संस्थानों में 84.6 प्रतिशत संस्थान फुटकर व्यापार, विनिर्माण एवं लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें के अन्तर्गत आते हैं, जिनमें वर्ष 1998–2005 की अवधि में सर्वाधिक वृद्धि 143.30 प्रतिशत फुटकर व्यापार के अन्तर्गत परिलक्षित हुई, जिसका विवरण निम्न तालिका में दिया गया है:–

प्रमुख कार्यकलाप वर्ग	संस्थानों की संख्या(लाख में)		प्रतिशत	स्थान	प्रतिशत वृद्धि (1998–2005)
	1998	2005			
फुटकर व्यापार	1.94	4.72	41.5	1	143.30
विनिर्माण	1.74	2.90	25.5	2	66.67
लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें	2.18	2.00	17.6	3	(–)8.26′
अन्य (शेष सभी)	0.83	1.75	15.4	–	110.84
समस्त	6.69	11.37	100.0	–	69.95

(तालिका–एस–1)

2.2.4 ग्रामीण क्षेत्रः कुल उद्यम

ग्रामीण क्षेत्र के अकृषीय उद्यमों में 54.0 प्रतिशत फुटकर व्यापार, 23.7 प्रतिशत विनिर्माण एवं 11.1 प्रतिशत लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें के अन्तर्गत कार्यरत हैं:–

प्रमुख कार्यकलाप वर्ग	उद्यमों की संख्या(लाख में)		प्रतिशत	स्थान	प्रतिशत वृद्धि (1998–2005)
	1998	2005			
फुटकर व्यापार	5.46	10.65	54.0	1	95.05
विनिर्माण	3.23	4.67	23.7	2	44.58
लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें	2.88	2.19	11.1	3	(–)23.95′
अन्य (शेष सभी)	0.98	2.22	11.3	–	126.53
समस्त	12.55	19.73	100.0	–	57.21

(तालिका–एस–1)

2.2.5 ग्रामीण क्षेत्रः स्वकार्य उद्यम

ग्रामीण क्षेत्र में स्वकार्य उद्यमों के अन्तर्गत 59.6 प्रतिशत फुटकर व्यापार 22.5 प्रतिशत विनिर्माण, 6.7 प्रतिशत लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें में स्थित हैं:–

प्रमुख कार्यकलाप वर्ग	उद्यमों की संख्या(लाख में)		प्रतिशत	स्थान	प्रतिशत वृद्धि (1998–2005)
	1998	2005			
फुटकर व्यापार	5.10	8.97	59.6	1	75.88
विनिर्माण	2.56	3.39	22.5	2	32.42
लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें	1.88	1.01	6.7	3	(–)46.28′
अन्य (शेष सभी)	0.76	1.67	11.1	–	119.74
समस्त	10.30	15.04	100.0	–	46.02

(तालिका–एस–1)

2.2.6 ग्रामीण क्षेत्रः संस्थान

ग्रामीण क्षेत्र में स्थित कुल संस्थानों में से 25 प्रतिशत लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें, 27.3 प्रतिशत विनिर्माण एवं 36 प्रतिशत फुटकर व्यापार में कार्यशील हैं ।

वर्ष 1998 की अपेक्षा वर्ष 2005 में कुल संस्थानों में 109.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई है । विनिर्माण में 91.0 प्रतिशत तथा फुटकर व्यापार में 369.0 प्रतिशत वृद्धि परिलक्षित हुई है । तुलनात्मक विवरण निम्नवत है ।

प्रमुख कार्यकलाप वर्ग	उद्यमों की संख्या(लाख में)		प्रतिशत	स्थान	प्रतिशत वृद्धि (1998–2005)
	1998	2005			
फुटकर व्यापार	0.36	1.69	36.0	1	369.0
विनिर्माण	0.67	1.28	27.3	2	91.0
लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें	1.00	1.17	25.0	3	17.0'
अन्य (शेष सभी)	0.21	0.55	11.7	–	161.9
समस्त	2.24	4.69	100.0	–	109.4

(तालिका–एस–1)

' तुलनीय नहीं है ।

2.2.7 नगरीय क्षेत्रः कुल उद्यम

नगरीय क्षेत्र में स्थित अकृषीय उद्यमों में 54.4 प्रतिशत फुटकर व्यापार, 9.3 प्रतिशत लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें एवं 19.7 प्रतिशत उद्यम विनिर्माण सेवाओं के अन्तर्गत कार्यरत हैं ।

वर्ष 1998–2005 की अवधि में समग्र उद्यमों के अन्तर्गत 23.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई है । यही वृद्धि फुटकर व्यापार के अन्तर्गत 38.7 प्रतिशत विनिर्माण में 35.4 प्रतिशत रही । तुलनात्मक स्थिति निम्न प्रकार है ।

प्रमुख कार्यकलाप वर्ग	उद्यमों की संख्या(लाख में)		प्रतिशत	स्थान	प्रतिशत वृद्धि (1998–2005)
	1998	2005			
फुटकर व्यापार	7.03	9.75	54.4	1	38.7
विनिर्माण	2.60	3.52	19.7	2	35.4
लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें	3.01	1.66	9.3	3	(–)44.85'
अन्य (शेष सभी)	1.87	2.97	16.6	–	58.82
समस्त	14.51	17.90	100.0	–	23.4

(तालिका–एस–1)

' तुलनीय नहीं है ।

2.2.8 नगरीय क्षेत्रः स्वकार्य उद्यम

नगरीय क्षेत्र में स्वकार्य उद्यमों के अन्तर्गत 59.9 प्रतिशत फुटकर व्यापार, 7.4 प्रतिशत लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें एवं 16.9 प्रतिशत विनिर्माण सेवाओं में कार्यशील हैं ।

स्वकार्य उद्यमों के अन्तर्गत वर्ष 1998–2005 की अवधि में कुल वृद्धि 11.4 प्रतिशत परिलक्षित हुई है । इसके अन्तर्गत फुटकर व्यापार में 22.9 प्रतिशत, विनिर्माण में 24.2 प्रतिशत की वृद्धि हुई है । विस्तृत विवरण निम्न तालिका में प्रदर्शित है ।

प्रमुख कार्यकलाप वर्ग	उद्यमों की संख्या(लाख में)		प्रतिशत	स्थान	प्रतिशत वृद्धि (1998–2005)
	1998	2005			
फुटकर व्यापार	5.46	6.71	59.9	1	22.9
विनिर्माण	1.53	1.90	16.9	2	24.2
लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें	1.83	0.83	7.4	3	(–)54.60'
अन्य (शेष सभी)	1.24	1.77	15.8	–	42.7
समस्त	10.06	11.21	100.0	–	11.4

(तालिका–एस–1)

' तुलनीय नहीं है ।

2.2.9 नगरीय क्षेत्रः संस्थान

नगरीय क्षेत्र के संस्थानों में वर्ष 1998–2005 की अवधि में कुल वृद्धि 50.3 प्रतिशत की रही, जिसमें फुटकर व्यापार एवं विनिर्माण सेवाओं में क्रमशः 93.6 व 51.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई । विस्तृत विवरण निम्नलिखित तालिका में प्रदर्शित है :–

प्रमुख कार्यकलाप वर्ग	उद्यमों की संख्या(लाख में)		प्रतिशत	स्थान	प्रतिशत वृद्धि (1998–2005)
	1998	2005			
फुटकर व्यापार	1.57	3.04	45.5	1	93.6
विनिर्माण	1.07	1.62	24.2	2	51.4
लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें	1.18	0.83	12.4	3	(–)29.70'
अन्य (शेष सभी)	0.63	1.20	17.9	–	90.5
समस्त	4.45	6.69	100.0	–	50.3

(तालिका–एस–1)

' तुलनीय नहीं है ।

2.3 रोजगार आकार वर्गानुसार उद्यम व उनमें कार्यरत व्यक्ति

2.3.1 आर्थिक गणना 2005 के परिणामों से यह विदित होता है कि प्रदेश के कुल 40.21 लाख उद्यमों में 81.45 लाख(प्रति उद्यम 2.0 व्यक्ति) व्यक्ति कार्यरत थे, जिनमें से 22.05 लाख ग्रामीण उद्यमों में 40.82 लाख व्यक्ति(प्रति उद्यम 1.85 व्यक्ति) तथा 18.16 लाख नगरीय उद्यमों में 40.63 लाख व्यक्ति(प्रति उद्यम 2.24 व्यक्ति) कार्यरत थे । (तालिका–एस–1, एस–2)

2.3.2 उद्यमों व उनमें कार्यरत व्यक्तियों की संख्या की रोजगार आकार वर्गानुसार विवेचना से विदित होता है कि 1–5, 6–9 एवं 10 तथा अधिक रोजगार आकार वर्गों में क्रमशः 38.99 लाख, 0. 96 लाख व 0.26 लाख उद्यम एवं उनमें क्रमशः 62.46 लाख, 6.79 लाख व 12.20 लाख व्यक्ति कार्यरत थे ।(तालिका–एस–13ए)

2.3.3 ग्रामीण क्षेत्र के अन्तर्गत 1–5, 6–9 व 10 तथा अधिक रोजगार आकार वर्गों में क्रमशः 21.52 लाख, 0.42 लाख व 0.11 लाख उद्यम एंव उनमें क्रमशः 33.17 लाख, 2.94 लाख तथा 4.71 लाख व्यक्ति कार्यरत थे ।(तालिका–एस–13ए)

2.3.4 नगरीय क्षेत्र के अन्तर्गत 1–5, 6–9 व 10 तथा अधिक रोजगार आकार वर्गों में क्रमशः 17.47 लाख, 0.54 लाख तथा 0.15 लाख उद्यम एवं उनमें क्रमशः 29.29 लाख, 3.85 लाख तथा 7.49 लाख व्यक्ति कार्यरत थे ।(तालिका–एस–13ए)

2.4 जनसंख्या व क्षेत्रवार कुल उद्यमों तथा प्रमुख उद्योगों के उद्यमों का अन्तर्जनपदीय घनत्व

2.4.1 आर्थिक गणना–2005 के अन्तर्गत उद्यमों की संख्या के आधार पर जनपद लखनऊ प्रथम स्थान पर रहा जहॉ सर्वाधिक 159.63 हजार(4.0 प्रतिशत) उद्यम कार्यशील थे । दूसरे व तीसरे स्थान पर क्रमशः जनपद कानपुर नगर व मेरठ रहें, जिसमें क्रमशः 144.52 हजार (3.6 प्रतिशत) व 119.39 हजार(3.0 प्रतिशत) उद्यम कार्यशील थे । जनपद श्रावस्ती में सबसे कम 13.11 हजार(0.3 प्रतिशत) उद्यम कार्यशील पाये गये ।(तालिका–एस–7)

2.4.2 प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्र में स्थित उद्यमों की संख्या की विवेचना करने पर ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 70.86 हजार उद्यम(प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्र में स्थित कुल उद्यमों का 3.2 प्रतिशत जनपद अलीगढ़ में कार्यशील पाये गये । दूसरे व तीसरे स्थान पर क्रमशः जनपद बदायूँ व गोरखपुर रहें,

जिसमें कार्यशील उद्यमों की संख्या क्रमशः 69.51 हजार(3.1 प्रतिशत) व 63.96 हजार(2.9 प्रतिशत) थी ।(तालिका–एस–7)

2.4.3 नगरीय क्षेत्र में सर्वाधिक 129.05 हजार उद्यम जनपद लखनऊ में पाये गये जो प्रदेश के नगरीय क्षेत्र में स्थित कुल उद्यमों का 7.1 प्रतिशत है । इसी क्रम में जनपद कानपुर नगर व गाजियाबाद क्रमशः द्वितीय व तृतीय स्थान पर रहा, जिसमें पाये गये उद्यमों की संख्या क्रमशः 116. 95 हजार(6.4 प्रतिशत) व 88.12 हजार(4.9 प्रतिशत) थी ।(तालिका–एस–7)

2.4.4 स्वकार्य उद्यमों की संख्या की दृष्टि से जनपद लखनऊ (101499) प्रथम, जनपद बदायूँ (92183) द्वितीय तथा जनपद कानपुर नगर (86204) तृतीय स्थान पर रहा जबकि न्यूनतम 11501 उद्यम जनपद चित्रकूट में पाये गये । संस्थानों की संख्या जनपद कानपुर नगर में सर्वाधिक 58312 थी, जो प्रदेश में प्रथम स्थान पर रहा । जनपद लखनऊ में 58134 व जनपद सहारनपुर में 47360 संस्थान क्रियाशील थे और यह क्रमशः द्वितीय व तृतीय स्थान पर रहा जबकि जनपद श्रावस्ती में न्यूनतम 1599 संस्थान ही पाये गये ।(तालिका–एस–7)

2.4.5 प्रदेश में कार्यशील कुल 40.21 लाख उद्यमों में कार्यरत कुल 81.45 लाख व्यक्तियों में से जनपद लखनऊ में सर्वाधिक 3.89 लाख(4.8 प्रतिशत) व्यक्ति कार्यरत रहे । इस दृष्टि से जनपद कानपुर नगर व जी.बी.नगर क्रमशः द्वितीय व तृतीय स्थान पर रहा जिसमें कार्यरत व्यक्तियों की संख्या क्रमशः 3.77 लाख(4.6 प्रतिशत) व 3.07 लाख(3.7 प्रतिशत) थी । (तालिका–एस–8)

2.4.6 आर्थिक गणना–2005 के ऑकड़ों से यह परिलक्षित होता है कि प्रदेश में प्रति हजार जनसंख्या पर उद्यमों का घनत्व 22 था । जनपदवार प्रति हजार जनसंख्या पर उद्यमों की संख्या का विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि जनपद लखनऊ(39 उद्यम), जनपद मेरठ (36 उद्यम) तथा जनपद जी.बी.नगर(35 उद्यम) क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पर रहा। इस परिप्रेक्ष्य में जनपद श्रावस्ती सबसे पीछे रहा जिसमें प्रति हजार जनसंख्या पर उद्यमों की संख्या न्यूनतम 10 पायी गयी ।(तालिका–एस–7)

2.4.7 विभिन्न जनपदों की जनसंख्या तथा उनमें कार्यरत स्वकार्य उद्यमों की संख्या के विश्लेषण से विदित होता है कि प्रदेश में प्रति हजार जनसंख्या पर ऐसे उद्यमों का घनत्व 16 है जिसमें जनपद बदायूँ(27 उद्यम) प्रथम, जनपद अलीगढ़(26 उद्यम) द्वितीय तथा जनपद लखनऊ(25 उद्यम) तृतीय स्थान पर रहा । प्रदेश में प्रति हजार जनसंख्या पर न्यूनतम 7 उद्यम जनपद हरदोई में पाये गये ।(तालिका–एस–7)

2.4.8 प्रदेश में प्रति हजार जनसंख्या पर संस्थानों की औसत संख्या 6 थी, जिसकी जनपदीय विवेचना से ज्ञात होता है कि जनपद सहारनपुर में सर्वाधिक 15, जनपद लखनऊ में 14 तथा जनपद कानपुर नगर में 13 संस्थान थे, जबकि जनपद कौशाम्बी व श्रावस्ती प्रत्येक में यह संख्या प्रदेश की औसत संख्या से काफी कम मात्र एक थी ।(तालिका–एस–7)

2.4.9 प्रदेश में प्रति हजार जनसंख्या पर उद्यमों में कार्यरत कुल व्यक्तियों का औसत 45 था जिसके जनपदवार विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि जनपद गौतमबुद्ध नगर(232 व्यक्ति), जनपद लखनऊ(96 व्यक्ति) तथा जनपद कानपुर नगर(81 व्यक्ति) क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पर रहा जबकि जनपद श्रावस्ती में प्रति हजार जनसंख्या पर कुल व्यक्तियों का औसत न्यूनतम मात्र 15 व्यक्ति रहा ।(तालिका–एस–7)

2.4.10 प्रदेश में प्रति हजार जनसंख्या पर भाड़े के कर्मकरों का औसत 18 व्यक्ति था । जनपदवार विवेचना से विदित होता है कि जनपद गौतमबुद्ध नगर में सर्वाधिक 186 कर्मकर, जनपद लखनऊ में 52 कर्मकर तथा जनपद कानपुर नगर में 47 कर्मकर कार्यरत थे, जो क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पर रहे जबकि जनपद श्रावस्ती में इस दृष्टि से काफी कम अर्थात् न्यूनतम 2 कर्मकर भाड़े पर कार्यरत थे ।(तालिका–एस–6)

2.4.11 प्रदेश के 50.7 प्रतिशत उद्यम फुटकर व्यापार में, 20.4 प्रतिशत विनिर्माण में तथा 9.6 प्रतिशत लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें जैसे प्रमुख उद्योगों में केन्द्रित रहे। प्रमुख उद्योगों में स्थित उद्यमों की अन्तर्जनपदीय

विवेचना से ज्ञात होता है कि फुटकर व्यापार के अन्तर्गत कुल 20.4 लाख उद्यमों में से जनपद लखनऊ(0.86 लाख) प्रदेश में प्रथम, कानपुर नगर(0.70 लाख) द्वितीय तथा गाजियाबाद(0.41 लाख) तृतीय स्थान पर रहा, जबकि जनपद श्रावस्ती में न्यूनतम मात्र 8171 उद्यम ही पाये गये । विनिर्माण सेवाओं के अन्तर्गत कुल 8.19 लाख उद्यमों में जनपद वाराणसी(0.40 लाख) प्रदेश में प्रथम, सहारनपुर (0.29 लाख) द्वितीय तथा कानपुर नगर व बरेली(0.28 लाख) तृतीय स्थान पर रहा, जबकि जनपद श्रावस्ती में न्यूनतम मात्र 2658 उद्यम ही पाये गये । इसी प्रकार लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें में स्थित कुल 3.57 लाख उद्यमों में जनपद लखनऊ (0.20 लाख) प्रदेश में प्रथम, कानपुर नगर(0.14 लाख) द्वितीय तथा गाजियाबाद(0.12 लाख) तृतीय स्थान पर रहा, जबकि जनपद श्रावस्ती में न्यूनतम 701 उद्यम ही पाये गये ।

2.5 आर्थिक गणना 1977, 1980, 1990, 1998 व 2005 के परिणामों के आधार पर अकृषीय संस्थानों का तुलनात्मक विवरण

2.5.1 आर्थिक गणना 1977 का विषय क्षेत्र आर्थिक गणना 1980, 1990, 1998 व 2005 से भिन्न होने के कारण केवल 1980, 1990, 1998 व 2005 के कुल उद्यमों की संख्या की तुलना की जा सकती है जबकि अकृषीय संस्थानों की पांचों आर्थिक गणनाओं की संख्या तुलनीय है ।

2.5.2 1980 से 1990 में कुल उद्यमों की संख्या में वार्षिक वृद्धि दर 1.97 थी जबकि 1990 से 1998 में उक्त वृद्धि दर किंचित घट कर 1.83 रह गयी तथा 1998 से 2005 में वार्षिक वृद्धि दर 5.16 हो गयी । इसी प्रकार 1980 से 1990 की तुलना में 1990 से 1998 में कुल उद्यमों में कार्यरत व्यक्तियों की संख्या की वार्षिक वृद्धि दर 1.90 से घटकर 1.00 हो गयी, जबकि 1998 से 2005 में यह वृद्धि दर बढ़कर 2.34 हो गयी । उक्त ऑकड़ों की विवेचना से पाया गया कि प्रति उद्यम कार्यरत व्यक्तियों की संख्या 1980 में 2.64, 1990 में 2.62, 1998 में 2.46 तथा 2005 में 2.03 रही । सरकारी उद्यमों की संख्या में 1980–90 की अवधि में 12.7 प्रतिशत तथा 1990–98 की अवधि में 8. 8 प्रतिशत का ह्रास हुआ, जबकि इसके विपरीत 1998–2005 में 16.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई । सहकारी उद्यमों में 1980–90 के दशक में 53.4 प्रतिशत की वृद्धि के विपरीत 1990–98 में 52.9 प्रतिशत का ह्रास परिलक्षित हुआ । इसके विपरीत 1998–2005 में 171.4 प्रतिशत की अभूतपूर्व वृद्धि परिलक्षित हुई । निजी उद्यमों के अन्तर्गत 1980–90 में 24.0 प्रतिशत की वृद्धि तथा 1990–98 में 17.6 प्रतिशत एवं 1998–2005 में 79.0 प्रतिशत की वृद्धि दृष्टिगोचर हुई ।

2.5.3 अकृषीय संस्थानों की संख्या 1977 में 3.32 लाख थी जो बढ़कर 1980 में 4.90 लाख, 1990 में 6.65 लाख, 1998 में 7.31 लाख तथा 2005 में 11.38 लाख हो गयी । इस प्रकार 1977 से 1980 में यह वृद्धि 47.7 प्रतिशत, 1980 से 1990 में 35.6 प्रतिशत, 1990 से 1998 में 10.0 प्रतिशत तथा 1998 से 2005 में 70.0 प्रतिशत पायी गयी ।

2.5.4 सहकारी संस्थानों की संख्या 1977 से 1980 में 121.0 प्रतिशत की असाधारण वृद्धि के साथ 7237 से 16057 हो गयी तथा 1980 से 1990 के दशक में 51.3 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 24291 हो गयी परन्तु 1990 से 1998 की अवधि में 67.1 प्रतिशत के ह्रास के साथ 7997 हो गयी किन्तु उत्तरांचल रहित करने पर यह 6521 होती है, जिससे 1998–2005 में 47.0 प्रतिशत वृद्धि के साथ 9589 हो गयी । इसी क्रम में सरकारी संस्थानों में यद्यपि 1977(132862) से 1980(150070) में 13.0 प्रतिशत की वृद्धि अंकित की गयी थी, परन्तु 1980 से 1990 के दशक में 10.9 प्रतिशत के ह्रास के साथ इस श्रेणी के संस्थानों की संख्या 133715 हो गयी । पुनः 1998 में 1990 की तुलना में 7.9 प्रतिशत ह्रास के साथ सरकारी संस्थानों की संख्या 123174 अंकित की गयी, किन्तु इसे भी उत्तरांचल रहित करने पर 101243 होती है, जिससे 2005 में 1998 की तुलना में यह 18.1 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 119602 अंकित की गयी ।

2.5.5 आर्थिक गणना–2005 के परिणामों से यह निष्कर्ष निकलता है कि संस्थानों में सामान्यतः कार्यरत व्यक्तियों की संख्या 1977 में 28.16 लाख से बढ़कर 1980 में 31.29 लाख (वृद्धि 11.1

प्रतिशत) तथा 1980 से 1990 के बीच यह संख्या बढ़कर 40.40 लाख (वृद्धि 29.1 प्रतिशत) हो गयी । पुनः 1990 से 1998 की अवधि में 2.5 प्रतिशत की वृद्धि के साथ यह संख्या 41.41 लाख हो गयी, किन्तु उत्रांचल रहित करने पर यह 37.79 लाख होती है, जिससे 2005 में आशातीत 15.2 प्रतिशत की वृद्धि के साथ यह संख्या 43.52 लाख हो गयी । इस प्रकार प्रति संस्थान कुल कार्यरत व्यक्तियों की संख्या 1977, 1980, 1990, 1998 व 2005 में क्रमशः 8, 6, 6, 6 व 4 पायी गयी । भाड़े पर कार्यरत व्यक्तियों की संख्या में 1977 से 1980 में 8.0 प्रतिशत, 1980 से 1990 में 23.7 प्रतिशत, 1990 से 1998 में 0.5 प्रतिशत तथा 1998 से 2005 में 8.1 प्रतिशत की वृद्धि हुई । परिणामस्वरूप संस्थानों में कार्यरत कुल व्यक्तियों में भाड़े पर कार्यरत व्यक्तियों का अंश 1977, 1980, 1990, 1998 व 2005 में क्रमशः 90.2, 87.6, 84.6, 83.0 तथा 77.3 प्रतिशत परिलक्षित हुआ ।